GOVT. OF INDIA RNI NO.: UPBIL/2015/62096

UGC Approved Care Listed Journal

ISSN 2229-3620

MIS

SHODH SANCHAR Bulletin

An International
Multidisciplinary
Quarterly Bilingual
Peer Reviewed
Refereed
Research Journal

Vol. 10

Issue 40

October to December 2020

Editor in Chief
Dr. Vinay Kumar Sharma
D. Litt. - Gold Medalist

sanchar
Educational & Research Foundation

SHODH SANCHAR BULLETIN FAMILY

Honorary Patrons

Prof. Nageshwar Rao
Vice-chancellor
Indira Gandhi National Open University
New Delhi

Prof. Nirmala S Mourya
Vice-chancellor
Veer Bahadur Singh Purvanchal University
Jaunpur

Prof. Chetan Trivedi
Vice-chancellor
Bhakta Kavi Narsinh Mehta University
Junagadh, Gujarat

Prof. Manoj Dixit
Former Vice-chancellor
Dr. Ram Manohar Lohia Awadh University
Faizabad

Special Advisory Committee

K.K. Yadav (IPS)
Post Master General, Varanasi

Dr. Daau ji Gupt
International Chairman- Vishwa Hindi Samiti, New York

Prof. Suresh Rituparn
Director- Birla Foundation, New Delhi

Prof. Tribhuvan Nath Shukla
Chairman- Akhil Bhartiya Sahitya Parishad

Prof. Ramesh Chandra Tripathi
University of Lucknow, Lucknow

Prof. N.G. Devki
Cochin University, Kerala

Prof. Arun Hota
West Bengal State University, Baarasaat, Kolkata

Prof. K. Sita Lakshmi
Andhra University, Vishakhapatnam

Editorial Advisory Committee

Prof. K.S. Upadhyay, University of Mumbai.

Prof. Arjun Chahvan, Shivaji University, Kolhapur

Prof. R.B. Ram, B.B.A.U., Lucknow

Prof. Prem Shankar Tiwari, University of Lucknow

Prof. K.D. Singh, University of Lucknow, Lucknow

Prof. PadamKant, University of Lucknow, Lucknow

Prof. Harishankar Mishra, University of Lucknow

Prof. Yogendra Pratap Singh, University of Lucknow

Prof. Abdul Aleem, Aligarh Muslim University, Aligarh

Prof. Sheela Mishra, Usmania University, Hyderabad

Prof. Susheel Kumar Sharma, Mizoram University

Dr. Pradeep Dixit, Director- Utkarsh Academy, Kan

Dr. Dilip Sharma, Nagaanv College, Nagaanv, Ass

Prof. U.C. Vashistha, University of Lucknow, Luck

Prof. Amita Bajpayee, University of Lucknow, Lucknow

Prof. Arbind Kumar Jha, B.B.A.U., Lucknow

Prof. C.B.Sharma, Chairman, NIOS, New Delhi

Prof. Shradha Singh, Banaras Hindu University

Prof. Pawan Sharma, Meerut University, Meerut

Foreign Editorial Advisory Committee

Dr. Vijay Kumar Mehta
Vishwa Hindi Samiti, New York, America

Dr. Padmesh Gupta
Chairman, UK Hindi Samiti, London

Prof. Hemraj Sundar
Mahatma Gandhi Sansthan, Moka, Mauritius

Sneh Thakur
Editor- Vasudha, Toronto, Canada

Usha Raje Saxena
Vice President, UK Hindi Samiti, London

Dr. Suresh Chandra Shukla
Chairman- Indo Norwegian Information
Cultural Forum, Norway

Dr. Usha Devi Shukla
University of Durban, Durban, South Africa

Dr. Ghanshyam Sharma
University of Venice, Italy

Dr. Ram Prasad Bhatt
Hamburg University, Germany

UGC APPROVED
CARE LISTED JOURNAL
GOVT. OF INDIA RNI NO. - UPBIL/2015/62096

ISSN No. 2229-3620

MIS

SHODH SANCHAR Bulletin

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

• Vol. 10 • Issue 40 • October - December 2020

EDITORIAL BOARD

Prof. Surya Prasad Dixit
Lucknow University, Lucknow

Prof. Santosh Kumar Shukla
Jawahar Lal Nehru University, New Delhi

Prof. Karuna Shankar Upadhyay
Mumbai University, Mumbai

Prof. Abdul Alim
Aligarh Muslim University, Aligarh

Prof. Padam Kant
Lucknow University, Lucknow

Prof. Sheela Mishra
Usmania University, Hyderabad

Prof. Shraddha Singh
Banaras Hindu University

Prof. Pawan Sharma
Meerut University, Meerut

Prof. Hemraj Sundar
Mahatma Gandhi Sansthan, Moka, Mauritius

Prof. Susheel Kumar Sharma
Mizoram University, Mizoram

Prof. Arbind Kumar Jha
BBA Central University, Lucknow

Prof. Nagendra Ambedkar Sole
Central University of Rajasthan

EDITOR IN CHIEF

Dr. Vinay Kumar Sharma
Chairman
Sanchar Educational & Research Foundation, Lucknow

PUBLISHED BY

sanchar
Educational & Research Foundation

38.	EXECUTION OF GST ON VARIOUS SERVICES OF KONKAN RAILWAY	CHAITALI RAJENDRA KALYANKAR C. A. AJINKYA RAJIV PILANKAR	214
39.	TRANSFORMING INTO LEARNING ORGANIZATIONS: GLOBAL LESSON FOR HOSPITALS POST COVID 19 PANDEMIC	S. KARTHIKEYAN DR. A. SAVARIMUTHU	221
40.	THE RISE OF AAM AADMI PA RTY IN INDIAN POLITICS: AN ANALYTICAL STUDY	SUDHIR KUMAR AGRAHARI	225
41.	HIGHER EDUCATION CHALLENGES AND RESPONSES ON ADOPTION OF E-LEARNING METHODS.	MISS. SANA HIDAYAT NAKHWA	229
42.	MYTHICAL REPRESENTATION OF HMAR WOMEN	DR. LALTHAKIM HMAR	233
43.	प्राचीन सामाजिक परिवेश में दलित महिलाएं	डॉ. प्रतिमा गोंड	236
44.	भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध (2014–2019)	मनीषा कुमारी	241
45.	आधुनिक हिन्दी कविता और कबीरः प्रगतिवाद के सन्दर्भ में	डॉ0 अन्जु बाला	245
46.	अहिच्छत्र क्षेत्र से प्राप्त विष्णु मूर्तियाँ (कुषाण काल से गुप्तकाल तक)	सरोज कुमारी डॉ0 सुरभी श्रीवास्तव	249
47.	गठबन्धन की राजनीति एवं कांशीराम	डॉ0 त्रिसुख सिंह	254

ISSN - 2229-3620
APPROVED UGC CARE
SHODH SANCHAR BULLETIN
Vol. 10, Issue 40, October - December, 2020
Page Nos. 245-248
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

आधुनिक हिन्दी कविता और कबीरः प्रगतिवाद के सन्दर्भ में

❐ डॉ0 अन्जु बाला*

ABSTRACT

कबीर हिन्दी साहित्य के इतिहास के एक अप्रतिम कलाकार हैं। उनका काव्य देश और काल की सीमाओं से परे है। समाज सुधार के चिंतक कबीर ने अपने समकालीन वातावरण के संदर्भ में जो विचार तथा आदर्श प्रस्तुत किए वे सब अपनी उपयोगिता, आवश्यकता और महत्त्व के कारण आधुनिक काल में भी प्रांसगिक हैं। कबीर दास जी की सामाजिक, दार्शनिक, भावात्मक तथा आध्यात्मिक विचाराधारा का प्रभाव आधुनिक कविता पर भी दृष्टिगोचर होता है आधुनिक कवियों ने कबीर के विचारों को कहीं परिवर्द्वित तो कहीं संशोधित रूप में व्यक्त किया है। अभिव्यंजना के क्षेत्र में कबीर तथा आधुनिक कवियों में पर्याप्त अन्तर आ गया है पर आधुनिक कविता पर कबीर का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है– बाह्य भिन्नता भले ही हो पर मूल प्रवृति एक ही है। आधुनिक हिन्दी कविता के भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावादी युग, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद तथा नयी कविता की विचारधारा पर समकालीन प्रभाव के साथ –साथ कबीर का प्रभाव भी स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। प्रस्तुत शोध पत्र में प्रगतिवादी काव्यधारा पर कबीर के प्रभाव का विवेचन करना मेरा लक्ष्य है।

Keywords: *दलित वर्ग, पूँजीपति वर्ग, क्रान्ति, रूढ़ियाँ, लोक कल्याण, रहस्यवाद, समानता, सहानुभूति, आक्रोश, व्यंग्य, मानवता, एकता।*

प्रगतिवादी काव्यधारा का सीधा सम्बन्ध मार्क्सवादी तथा साम्यवादी विचारधारा से है। छह शताब्दी पूर्व कबीर साम्यवाद का वह नारा लगा चुके थे जो आधुनिक युग में मार्क्स तथा लेनिन से प्रभावित होकर प्रगतिवादी कवियों ने लगाया है। अन्तर केवल इतना है कि कबीर का साम्यवाद धार्मिक अधिक था तथा आधुनिक युग का आर्थिक। आर्थिक समस्याओं की जटिलता कबीर के युगीन समाज में कम थी। कबीर का प्रभाव आधुनिक प्रगतिवादी कविता पर देखने के लिए केवल आर्थिक दृष्टिकोण पर विचार करना ही पर्याप्त नहीं है। कबीर के मूल–भूत सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए हम प्रगतिवादी कविता पर उनके प्रभाव पर विचार कर सकते हैं।

कबीर ने धर्म और जाति के क्षेत्र में जिस समानता को लाने का प्रयास किया था उसी को आज का प्रगतिवादी कवि आर्थिक क्षेत्र में लाने का पक्षधर है। दलित वर्ग का उद्धार तथा जिस लोक कल्याण को अपना लक्ष्य मानकर प्रगतिवादी कवि आगे बढ़े हैं वह तो कबीर का बहुत पहले ही मूल सिद्धान्त था। कबीर ने सत्ताधारी ब्राह्मणों को फटकारा था और आज के प्रगतिवादी कवि ने समय के शोषक तथा पूँजीपति वर्ग को ललकारा है। प्रगतिवादी काव्यधारा के सिद्वान्त प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप में मूल रूप से कबीर से अनुप्रेरित हैं।

सन्तकवि कबीर के काव्य का लोक कल्याणकारी पक्ष प्रगतिवाणी काव्य की प्ररेणा बना है। कवि पन्त ने युगवाणी के सन्दर्भ में अपने काव्य की नवीन चेतना का परिचय देते हुए मध्यकालीन सन्तों का स्मरण किया है। सामाजिक शोषण, दुराचार तथा अन्याय के विरूद्व संघर्ष में आज भी कबीर का काव्य तीक्ष्ण अस्त्र की भांति हैं।

कबीर ने रूढ़ियों, अन्धविश्वासों, खोखली परम्पराओं का विरोध किया तथा समाज में क्रान्ति का सन्देश दिया वही निर्भीकता तथा स्पष्टवादिता आज के प्रगतिवादी कवियों में भी दृष्टिगोचर होती है। प्रगतिवादी कवियों में कबीर जैसी मस्ती के दर्शन भी होते हैं। कबीर की "हमन है इश्क मस्ताना हमें दुनिया से यारी क्या।" जैसी भावना निम्न प्रगतिवादी

*असिस्टेंट प्रोफेसर, गुरू नानक गर्ल्ज़ कॉलेज, यमुनानगर

काव्य पंक्तियों में देखने को मिलती है–

हम दीवानों की हस्ती क्या, आज यहाँ कल वहाँ चले
मस्ती का आलम साथ चला हम धूल उड़ाने जहाँ चले
हम भिखमंगों की दुनिया में स्वच्छन्द लुटा कर प्यार चलें

प्रगतिवादी कविता का महत्त्वपूर्ण पक्ष उसका सामाजिक पक्ष है जहां कवि ने समाज की उच्च सत्ता को ललकारा तथा शोषक और पूँजीपति वर्ग के प्रति अपना आक्रोश व्यक्त किया। समाज में एकता, समानता तथा मानवतावाद का नारा दिया। कबीर का सर्वाधिक प्रभाव प्रगतिवाद के इस पक्ष पर तो स्पष्ट रूप से दिखाई देता ही है इसके अतिरिक्त आध्यात्मिक तथा अभिव्यक्ति पक्ष पर भी यह प्रभाव देखा जा सकता है। प्रगतिवादी कविता को सामाजिक, आध्यात्मिक तथा अभिव्यक्ति तीन पक्षों में विभाजित कर उस पर कबीर की विचारधारा के प्रभाव को देख सकते हैं।

प्रगतिवाद के सामाजिक पक्ष पर कबीर का प्रभाव

प्रगतिवादी कवि भी कबीर की भांति समाज में फैली हुई विषमताओं का अन्त करके वर्गहीन समाज की स्थापना करना चाहते हैं। कबीर दास ने धार्मिक क्षेत्र में आडम्बरों तथा अन्धविश्वासों, का खण्डन किया था। आज का प्रगतिवादी कवि सभी प्रकार के अन्धविश्वासों, द्वन्द्वों तथा रूढ़ धर्म नीतियों से मुक्त स्वस्थ समाज स्थापना की कामना करता है। प्रगतिवादी काव्य की सामाजिक विचारधारा की मूलभूत विशेषताएँ हैं – दलित वर्ग का समर्थन, उच्च व पूंजीपूति वर्ग के प्रति आक्रोश, क्रान्ति की भावना, समानता तथा मानवता की भावना। इन सब पर कबीर का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। प्रगतिवादी कवि पन्त स्पष्ट रूप से लिखते हैं–

जो दीन हीन पीड़ित, निर्बल
मैं हूँ उनका जीवन संबल।
जो मोह छिन्न जग में विभक्त
वे मुझसे मिलें बनें सशक्त। [2]

समाज में शूद्रों की दयनीय स्थिति को देखकर जैसे कबीर के अन्तः करण में आक्रोश जागा था वैसे ही दीन हीन मानव को देखकर प्रगतिवादी कवि का क्रोध भी चरम सीमा पर पहुँच जाता है कबीर ने शूद्रों को पवित्र बताते हुए उन्हे ब्राहमणों के समकक्ष ठहराया था। ऐसे ही प्रगतिवादी आधुनिक कवि को पूर्ण विश्वास है कि साम्राज्यवाद का निश्चित रूप से पतन होगा।

उच्च सत्ता के प्रति जैसा आक्रोश कबीर में था वैसा ही निराला की इन काव्य पंक्तियों में भी देखने को मिलता है–

अबे, सुन बे गुलाब
भूल मत जो पाई खुशबू, रंग औ आब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतराता है तू कैपिटलिस्ट। [3]

वे कबीर के समान दलित वर्ग के प्रति सहानुभूति रखने वाले तथा उच्च वर्ग के निंदक रहे हैं।

आधुनिक प्रगतिवादी कवियों ने पूंजीपतियों, साहूकारों तथा ज़मीदारों पर तीखे प्रहार किए हैं। समाज में वर्गगत विषमता के लिए उन्हें ही ज़िम्मेवार माना है। पूँजीपति वर्ग के लिए उनका आक्रोश भगवतीचरण वर्मा की निम्नलिखित पंक्तियों में देखने को मिलता है–

वे व्यौपारी, वे ज़मीदार, वे हैं लक्ष्मी के परम भक्त
वे निपट निरामिष सूदखोर, पीते मनुष्य का उष्ण रक्त।
इस राज काज के वही स्तम्भ उनकी पृथ्वी उनका ही धन,
ये ऐश और आराम उन्हीं के और उन्हीं के स्वर्ग सदन।

प्रगतिवादी कवि रूढ़ियों तथा रूढ़िग्रस्त मान्यताओं के कट्टर विरोधी हैं। रूढ़ियों को तोड़ने के लिए प्रगतिवादी कवि क्रान्ति के आवश्यक मानता है। किसानों तथा मज़दूरों को उत्साहित करने के लिए कवि क्रान्ति लाना चाहता है। कवि उन्हें प्रेरित करते हुए कहता है–

तुम गरजो आज प्रलय होगी
शोषक वर्गों की क्षय होगी
दुनिया के कोने कोने से
मज़लूमों की जय–जय होगी।

प्रगतिवादी कवि चाहता है समाज में उथल–पुथल हो जिससे नवीन सृष्टि हो। नियमों के बन्धन से समाज मुक्त हो। कवि बालकृष्ण शर्मा नवीन क्रान्ति का सन्देश देते हुए कवि से कहते हैं–

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल–पुथल हो जाए,
एक हिलोर इधर से आए एक हिलोर उधर से आए।

कबीर ने हिन्दू–मुस्लिम एकता को लाने का प्रयास किया था। जातियों के बीच एकता नितान्त आवश्यक है। आज का कवि भी कबीर के समान हिन्दू–मुस्लिम दोनों को अलग–अलग जाति के रूप में नही केवल एक मानव के रूप देखना चाहता है।

कवि मंगल कामना करता हुआ कहता है–

हिन्दू-मुस्लिम नहीं रहेंगे भारत के नर, मानव होंगे वे
नव मानवता से मण्डित

काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह आदि विकारों से रहित प्रेम, त्याग, दया, उदारता, अहिंसा, सदाचरण आदि गुणों से विभूषित जिस मानव की कल्पना कबीर ने की थी, उसी मानव मूर्ति की स्थापना प्रगतिवादी कवि भी करना चाहता है।

कथनी और करनी तथा कर्म और चिन्तन के सामंजस्य पर ज़ोर देते हुए दिनकर ने कहा है–

जहाँ भुजा का एक पन्थ हो
अन्य पंथ चिन्तन का,
सम्यक रूप नहीं खुलता उस
द्वन्द्व ग्रस्त जीवन का [5]

इस प्रकार प्रगतिवादी कवियों ने अन्धविश्वासों तथा रूढ़ियों के विरूद्व विद्रोह करके क्रान्तिकारी कबीर की परम्परा को ही आधुनिक युग में अपने काव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। कबीर धर्म के क्षेत्र में जो क्रान्ति लाना चाहते थे, उसे प्रगतिवादी कवियों ने भौतिक क्षेत्र में लाने का प्रयत्न किया।

आध्यात्मिक पक्ष

कबीर का समस्त चिंतन, दर्शन और अध्यात्म की साधना समाज हित के लिए ही था। प्रगतिवादी कवि भी समाज के लिए उपयोगी तथा कल्याणकारी आध्यात्मिक दर्शन की खोज करता है। प्रगतिवादी काव्य में ब्रह्म, जीव, सृष्टि, माया और साधना का विवेचन भी देखने को मिलता है जिस पर कबीर के प्रभाव की झलक भी मिलती है।

सृष्टि और जीव के अस्तित्त्व को प्रगतिवादी कवियों ने भी सन्त कबीर के समान ही नश्वर सिद्व किया है। मानव इस सृष्टि में मेहमान जैसा है लेकिन साथ ही साथ वह सृष्टि के अमरत्व में विश्वास भी करता है। वह आशावादी है–

हावी यहां है मृत्यु पर
निर्माण का प्रहरी अभय
वरना न जाने हो चुकी होती
कभी की सृष्टि लय। [6]

प्रगतिवादी कवि रहस्य सत्ता की और भी आकृष्ट हुए हैं। वे कबीर के समान ही अपने प्रियतम की प्रतीक्षा में रत एक व्याकुलता का अनुभव करते हैं। उस अदृश्य प्रियतम को कबीर की जीवात्मा के समान ही वह सब कुछ समर्पित करने के लिए तत्पर हैं। रहस्यवाद की पराकाष्ठा में जब जीवात्मा परमात्मा के साथ लीन हो जाती है तो सभी प्रकार के बन्धनों से मुक्त हो जाती है।

इस अभेद अवस्था का चित्रण कवि पन्त ने इस प्रकार किया है–

निखिल ज्ञान विज्ञान तर्क
औ जन्म मरणर प्रश्नोत्तर
सार्थक सब हो गए आज
चिर तन्मय तुम में होकर।

इस प्रकार कबीर का प्रभाव प्रगतिवादी काव्यधारा के आध्यात्मिक पक्ष पर भी देखने को मिल ही जाता है। यद्यपि दृष्टिकोण भी भिन्नता के कारण उनका चिन्तन कबीर जैसा नहीं है। प्रगतिवादी कवि संसार की भौतिकता में विश्वास रखते हैं इसलिए वे संसार के मिथ्यात्व की घोषणा नहीं करते। उस परम सत्ता से सम्बन्ध जोड़ने को इतने लालायित नहीं जितने कि कबीर थे।

प्रगतिवादी काव्य के आध्यात्मिक पक्ष पर कबीर का प्रभाव कम ही दिखाई देता है क्योंकि प्रगतिवादी कवि उस अदृश्य सत्ता से सम्बन्ध जोड़ने को उतना लालायित नही जितना कबीर थे। ये कवि भौतिक संसार की सत्यता में विश्वास रखते हैं।

अभिव्यक्ति पक्ष

कबीर ने साधन को प्रमुख माना है साध्य को नही। वे अपने विचारों को जन समाज तक पहुँचाना चाहते थे इस के लिए उन्होने अपनी रचनाओं में अलंकारों, छन्दों तथा तत्सम शब्दावली के प्रयोग को अपना साध्य नही बनाया। उन्होने अभिव्यक्ति को सरल तथा जन साधरण के निकट लाने का प्रयास किया। कबीर ने बोलचाल की तद्भव शब्दावली का प्रयोग किया। प्रगतिवादी कवियों ने भी अपनी रचनाओं में लोकभाषा तथा देशज, विदेशी सभी प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है। जिस तरह कबीर ने पण्डों और मुल्लाओं का विरोध करते हुए तू–तड़ाक का प्रयोग किया उसी तरह पूँजीपति वर्ग के प्रति अपना गुस्सा व्यक्त करते हुए प्रगतिवादी कवियों ने भी अक्खड़ शैली का प्रयोग किया है, विशेषकर निराला की रचनाओं में यह शैली दृष्टिगोचर होती है। उनकी शैली में निर्भीकता तथा व्यंग्यात्मकता के दर्शन होते हैं। उनकी रचनाएँ कुकुरमुत्ता, नये पत्ते, आदि इस दृष्टि से प्रमुख हैं।

धनिक वर्ग की चापलूसी तथा खुशामद करने वाले व्यक्तियों पर व्यंग्य करते हुए नागार्जुन ने लिखा है–

सपने में भी सच न बोलना वर्ना पकड़े जाओगे।
माल मिलेगा रेत सको यदि गला मजूर किसानों का।
हम मरमुखों से क्या होगा, चरण गहो श्रीमानों का।

प्रगतिवादी कवियों की यह व्यंग्यात्मक शैली अपने युग की आवश्यकता है और इसका तीखापन कबीर की व्यंग्यशैली को स्मरण कराता है। प्रतीकात्मक शैली भी प्रगतिवादी कवियों तथा कबीर की रचनाओं में पाई जाती है।

स्पष्टतः प्रगतिवादी काव्य धारा युगीन परिस्थितियों के साथ–साथ कबीर की विचारधारा से भी अनुप्रेरित रही है। कबीर समाज में जिस समानता, एकता तथा मानवता को स्थापित करना चाहते थे, समाज में दीन हीन समझे जाने वाले शूद्र वर्ग के कल्याण के लिए जिस स्वर में उन्हाने उच्चवर्ग को ललकारा था वही स्वर आज के प्रगतिवादी कवि का भी सुनाई पड़ता है। उन्होने भी दलित तथा श्रमिक वर्ग का समर्थन करते हुए शोषक तथा पूँजीपति वर्ग के प्रति अपना आक्रोश प्रकट किया। शोषण से मुक्त होने के लिए क्रान्ति का आह्वान किया। क्रान्ति के माध्यम से प्रगति के मार्ग में बाधक रूढ़ियों तथा पुरातन मान्यताओं को समूल उखाड़ने की भावना से उन्होंने कबीर की परम्परा को पुनर्जीवित किया है। जनहित का लक्ष्य कबीर से प्रेरित रहा है भले ही समकालीन परिस्थितियाँ भिन्न होने के कारण उसका स्वरूप बदल गया है। आध्यात्मिक तथा रहस्यात्मक अनुभूति पर कबीर का प्रभाव नगण्य है। अभिव्यक्ति पक्ष में व्यंग्यात्मक शैली कबीर का स्मरण कराती है। प्रगतिवादी काव्यधारा का सामाजिक पक्ष निम्न वर्ग के प्रति सहानुभूति, उच्च वर्ग के प्रति घृणा तथा क्रान्ति की भावना, मानवता की स्थापना आदि मूलभूत विशेषताएँ युगीन प्रभाव को साथ कबीर के विचारों तथा आदर्शों का पुनः प्रस्तुतीकरण सा प्रतीत होता है।

सन्दर्भ

1. भगवतीचरण वर्मा – ये सात और हम – पृष्ठ संख्या –152
2. पन्त – युगान्त युगपथ – पृष्ठ सं 28
3. निराला कुकुरमुत्ता – पृष्ठ संख्या 39
4. पन्त – युगपथ (युगान्तर) पृष्ठ संख्या 75
5. रामधारी सिंह दिनकर – कुरूक्षेत्र – पृष्ठ संख्या 137
6. शिवमंगल सिंह सुमन– प्रलय सृजन – पृष्ठ संख्या 40
7. प्रकाशचन्द्र गुप्त– भारतीय साहित्य की जनवादी परम्परा– पृष्ठ संख्या 60–61

❑❑❑